विभूतिपाद

संगति — अब अश्रद्धालु को श्रद्धापूर्वक योग में प्रवृत्त करने के लिए योग की विभूतियाँ बतलाई जाती हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार के बाद धारणा की व्याख्या की जाती है।

देशबन्धश्चित्तस्य धारणा ॥१॥

चित्तस्य — चित्त का (किसी)
देश — स्थान (विशेष में)
बन्धः — बाँधना
धारणा — धारणा (कहलाता है)।

संगति — ध्यान क्या है ?

तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् ॥२॥

तत्र — उस (धारणा) में
प्रत्यय — वृत्ति का
एकतानता — एक सा बना रहना
ध्यानम् — ध्यान (कहलाता है)।

संगति — समाधि क्या है ?

तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः ॥३॥

तदेव — उस (ध्यान में केवल ध्येय का)
अर्थ — अर्थ
मात्र — मात्र (सा)

निर्भासम् — भासना (और निज)
स्वरूप — स्वरूप (से)
शून्यम् — शून्य
इव — जैसा (हो जाना)
समाधिः — समाधि (कहलाता है)।

संगति — पूर्वोक्त धारणा, ध्यान और समाधि को क्या कहते हैं ?

त्रयमेकत्र संयमः ॥४॥

त्रयम् — तीनों अर्थात् धारणा, ध्यान और समाधि (का एक ही ध्येय विषय में)
एकत्र — एक साथ (होना)
संयमः — संयम (कहलाता है)।

संगति — संयम को जीत लेने का क्या फल है ?

तज्जयात्प्रज्ञालोकः ॥५॥

तत् — उस (संयम के)
जयात् — सिद्ध होने से
प्रज्ञा — प्रज्ञा (का)
आलोकः — प्रकाश (होता है)।

संगति — संयम का क्या उपयोग है ?

तस्य भूमिषु विनियोगः ॥६॥

तस्य — उस (संयम का चित्त की स्थूल से सूक्ष्म)
भूमिषु — भूमियों में

विनियोगः — प्रयोग (करना चाहिए) ।

संगति — धारणा, ध्यान और समाधि का योग के पहले पाँच अंगों से क्या सम्बंध है ?

त्रयमन्तरङ्गं पूर्वेभ्यः ॥७॥

पूर्वेभ्यः — पहले पाँचों अङ्गों अर्थात् यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार (की अपेक्षा ये)
त्रयम् — तीनों अर्थात् धारणा, ध्यान और समाधि
अन्तरङ्गम् — अंदर के अङ्ग (हैं) ।

संगति — धारणा, ध्यान और समाधि का निर्बीज समाधि से क्या सम्बंध है ?

तदपि बहिरङ्गं निर्बीजस्य ॥८॥

तत् — वे (धारणा, ध्यान और समाधि)
अपि — भी
निर्बीजस्य — असम्प्रज्ञात समाधि के
बहिरङ्गम् — बाहर के अङ्ग (हैं) ।

संगति — असम्प्रज्ञात समाधि जो सम्प्रज्ञात समाधि के बाद की अवस्था है, उस में निरोध-परिणाम क्या है ?

व्युत्थाननिरोधसंस्कारयोरभिभवप्रादुर्भावौ निरोधक्षणचित्तान्वयो निरोधपरिणामः ॥९॥

व्युत्थान — एकाग्रता अथवा सम्प्रज्ञात समाधि (और)
निरोध — पर-वैराग्य (के)

संस्कारयोः — संस्कारों का (क्रम से)
अभिभव — दबना (और)
प्रादुर्भावौ — प्रकट (होना),
चित्त — चित्त (का इन दोनों संस्कारों से)
निरोध — निरोध
क्षण — काल (में)
अन्वयः — सम्बन्ध (होना)
निरोध — निरोध
परिणामः — परिणाम[२२] (है) ।

संगति — निरोध-संस्कार का क्या फल है ?

---

[२२] **धर्म-परिणाम** — पूर्व धर्म की निवृत्ति और नये धर्म की प्राप्ति की संभावना ।

लक्षण-परिणाम — अनागत अर्थात् धर्म का वर्तमान में प्रकट (उदित) होने से पहले भविष्य में छिपा रहना, वर्तमान अर्थात् धर्म का भविष्य को छोड़ कर वर्तमान में प्रकट होना, अतीत अर्थात् धर्म का वर्तमान को छोड़ कर भूतकाल में छिप जाना ।

अवस्था-परिणाम — धर्म के अनागत लक्षण से वर्तमान लक्षण और वर्तमान लक्षण से अतीत लक्षण में जाने तक उसकी अवस्था को क्रम से दृढ़ अथवा दुर्बल करने में प्रतिक्षण परिणाम होना ।

इस तरह आधार स्वरूप धर्मी का धर्मों से, धर्म का लक्षणों से और लक्षणों का अवस्था से परिणाम होता रहता है ।

तस्य प्रशान्तवाहिता संस्कारात् ॥१०॥

तस्य — उस (चित्त का)
प्रशान्त — प्रशान्त
वाहिता — बहना (निरोध)
संस्कारात् — संस्कार से (होता है) ।

संगति — सम्प्रज्ञात समाधि में समाधि-परिणाम क्या है ?

सर्वार्थतैकाग्रतयोः क्षयोदयौ चित्तस्य समाधिपरिणामः ॥११॥

सर्व-अर्थता — (चित्त की) सब प्रकार के विषयों (और)
एकाग्रतयोः — किसी एक ही ध्येय विषय को चिन्तन करने वाली वृत्ति का (क्रम से)
क्षय — क्षय (और)
उदयौ — उदय होना
चित्तस्य — चित्त का
समाधि — समाधि
परिणामः — परिणाम (है) ।

संगति — चित्त की समाहित अवस्था में एकाग्रता-परिणाम क्या है ?

ततः पुनः शान्तोदितौ तुल्यप्रत्ययौ चित्तस्यैकाग्रतापरिणामः ॥१२॥

ततः — तब
पुनः — फिर (उक्त)
शान्त — शान्त (और)
उदितौ — उदित हुई

प्रत्ययौ — वृत्तियों (का एक ही ध्येय विषय में)
तुल्य — समान (हो जाना)
चित्तस्य — चित्त का
एकाग्रता — एकाग्रता
परिणामः — परिणाम (है) ।

संगति — चित्त के सदृश ही भूत और इन्द्रियों के क्या परिणाम हैं ?

एतेन भूतेन्द्रियेषु धर्मलक्षणावस्थापरिणामा व्याख्याताः ॥१३॥

एतेन — इस (चित्त के परिणाम के समान ही)
भूत — भूत (और)
इन्द्रियेषु — इन्द्रियों में
धर्म — धर्म,
लक्षण — लक्षण (और)
अवस्था — अवस्था (के)
परिणामाः — परिणाम
व्याख्याताः — व्याख्यान (किए हुए जानने चाहिएं) ।

संगति — धर्मों के आधार में कौन विद्यमान है ?

शान्तोदिताव्यपदेश्यधर्मानुपाती धर्मी ॥१४॥

शान्त — (उन परिणामों के) अतीत,
उदित — वर्तमान (और)
अव्यपदेश्य — भविष्यत्
धर्म — धर्मों (में आधाररूप से)
अनुपाती — विद्यमान
धर्मी — धर्मी (है) ।

संगति — एक ही धर्मी के अनेक धर्म किस प्रकार हो सकते हैं ?

क्रमान्यत्वं परिणामान्यत्वे हेतुः ॥१५॥

क्रम — क्रमों (की)
अन्यत्वम् — भिन्नता
परिणाम — परिणाम (की)
अन्यत्वे — भिन्नता में
हेतुः — कारण (है) ।

संगति — परिणामों में संयम करने से क्या होता है ?

परिणामत्रयसंयमादतीतानागतज्ञानम् ॥१६॥

त्रय — तीनों अर्थात् धर्म, लक्षण और अवस्था
परिणाम — परिणामों (में)
संयमात् — संयम करने से
अतीत — भूत (और)
अनागत — भविष्य (का)
ज्ञानम् — ज्ञान (होता है) ।

संगति — सब प्राणियों के शब्द का ज्ञान कैसे होता है ?

शब्दार्थप्रत्ययानामितरेतराध्यासात् संकरस्तत्प्रविभागसंयमात् सर्वभूतरुतज्ञानम् ॥१७॥

शब्द — शब्द,
अर्थ — अर्थ (और)
प्रत्ययानाम् — ज्ञान के
इतर-इतर — परस्पर

अध्यासात् — मिथ्या आरोपण से
संकरः — अभेद (भासना होता है);
तत् — उन (शब्द, अर्थ और ज्ञान) के
प्रविभाग — विभाग (में)
संयमात् — संयम करने से
सर्व — सब
भूत — भूत (प्राणियों की)
रुत — वाणी (का)
ज्ञानम् — ज्ञान (होता है) ।

संगति — पूर्व जन्म का ज्ञान कैसे होता है ?

संस्कारसाक्षात्करणात् पूर्वजातिज्ञानम् ॥१८॥

संस्कार — (संयम द्वारा) संस्कारों (का)
साक्षात् — साक्षात्
करणात् — करने से
पूर्व — पूर्व
जाति — जन्म (का)
ज्ञानम् — ज्ञान (होता है) ।

संगति — पर-चित्त का ज्ञान कैसे होता है ?

प्रत्ययस्य परचित्तज्ञानम् ॥१९॥

प्रत्ययस्य — (संयम द्वारा) दूसरे के चित्त की वृत्ति (को साक्षात् करने से)
पर — दूसरे (के)
चित्त — चित्त (का)

ज्ञानम् — ज्ञान (होता है) ।

संगति — पूर्वोक्त चित्त-संयम का क्या भेद है ?

न च तत् सालम्बनं तस्याविषयीभूतत्वात् ॥२०॥

च — किंतु
तत् — वह (दूसरे का)
आलम्बनम् — विषय सहित (चित्त)
स — विषय सहित (साक्षात्)
न — नहीं (होता, क्योंकि)
तस्य — वह (चित्त)
भूतत्वात् — उस संयम (का)
अविषयी — विषय नहीं (था) ।

संगति — योगी अन्तर्धान कैसे होता है ?

कायरूपसंयमात् तद्ग्राह्यशक्तिस्तम्भे चक्षुःप्रकाशासम्प्रयोगेऽन्तर्धानम् ॥२१॥

काय — शरीर (के)
रूप — रूप (में)
संयमात् — संयम करने से (और)
तत् — उसकी
ग्राह्य — ग्राह्य
शक्ति — शक्ति
स्तम्भे — रोकने से (दूसरे की)
चक्षुः — आँखों (के)
प्रकाश — प्रकाश (का)

असम्प्रयोगे — संयोग न होने पर (योगी)
अन्तर्धानम् — अन्तर्धान (होता है) ।

संगति — मृत्यु का ज्ञान कैसे होता है ?

सोपक्रमं निरुपक्रमं च कर्म तत्संयमादपरान्तज्ञानमरिष्टेभ्यो वा ॥२२॥

सोपक्रमम् — आरम्भ सहित अर्थात् तीव्र वेग वाले कर्म जिनका फल आरम्भ हो चुका है
च — और
निरुपक्रमम् — आरम्भ रहित अर्थात् मन्द वेग वाले कर्म जिनका फल अभी आरम्भ नहीं हुआ, (इन दो प्रकार के)
कर्म — कर्मों
तत् — में
संयमात् — संयम करने से,
वा — अथवा,
अरिष्टेभ्यः — उल्टे चिह्नों से,
अपरान्त — मृत्यु (का)
ज्ञानम् — ज्ञान (होता है) ।

संगति — मैत्री आदि बल कैसे प्राप्त होते हैं ?

मैत्र्यादिषु बलानि ॥२३॥

मैत्री — मैत्री
आदिषु — आदि में (संयम करने से मैत्री, करुणा और मुदिता)
बलानि — बल (प्राप्त होते हैं) ।

संगति — हाथी जैसा बल कैसे प्राप्त हो ?

बलेषु हस्तिबलादीनि ॥२४॥

बलेषु — (भिन्न-भिन्न) बलों में (संयम करने से)
हस्ति — हाथी
आदीनि — आदि के (बल के सदृश भिन्न-भिन्न)
बल — बल (प्राप्त होते हैं) ।

संगति — सूक्ष्म, आड़ वाली और दूर की वस्तुओं का ज्ञान कैसे होता है ?

प्रवृत्त्यालोकन्यासात् सूक्ष्मव्यवहितविप्रकृष्टज्ञानम् ॥२५॥

प्रवृत्ति — (ज्योतिष्मति) प्रवृत्ति (का)
आलोक — प्रकाश
न्यासात् — डालने से
सूक्ष्म — सूक्ष्म अर्थात् इन्द्रियातीत,
व्यवहित — व्यवधान अर्थात् आड़ वाली (और)
विप्रकृष्ट — दूर की (वस्तुओं का)
ज्ञानम् — ज्ञान (होता है) ।

संगति — भुवन-ज्ञान कैसे होता है ?

भुवनज्ञानं सूर्ये संयमात् ॥२६॥

सूर्ये — सूर्य (सुषुम्ना[२३]) में

[२३] **तीन मुख्य नाड़ियाँ** — मेरुदण्ड में सुषुम्ना (सुषुम्ना में वज्रा, वज्रा में चित्रिणी और चित्रिणी में ब्रह्म नाड़ी), इड़ा और पिंगला ।

संयमात् — संयम करने से
भुवन — भुवनों अर्थात् भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्य, (इन सात लोकों का)
ज्ञानम् — ज्ञान (होता है) ।

संगति — नक्षत्रों का ज्ञान कैसे होता है ?

चन्द्रे ताराव्यूहज्ञानम् ॥२७॥

चन्द्रे — चन्द्रमा में (संयम करने से)
तारा — ताराओं अर्थात् नक्षत्रों (के)
व्यूह — व्यूह (का)
ज्ञानम् — ज्ञान (होता है) ।

संगति — ताराओं और नक्षत्रों की गति का ज्ञान कैसे होता है ?

ध्रुवे तद्गतिज्ञानम् ॥२८॥

ध्रुवे — ध्रुव तारा में (संयम करने से)
तत् — उन (ताराओं की)
गति — गति (का)
ज्ञानम् — ज्ञान (होता है) ।

संगति — अब संयम की आभ्यन्तर विभूतियों का वर्णन करते हैं ।

नाभिचक्रे कायव्यूहज्ञानम् ॥२९॥

नाभि — नाभि

चक्रे — चक्र[२४] में (संयम करने से)
काय — शरीर (के)
व्यूह — व्यूह (का)
ज्ञानम् — ज्ञान (होता है) ।

संगति — भूख और प्यास की निवृत्ति कैसे होती है ?

कण्ठकूपे क्षुत्पिपासानिवृत्तिः ॥३०॥
कण्ठ — कण्ठ (के)
कूपे — गड्ढे में (संयम करने से)
क्षुत् — भूख (और)
पिपासा — प्यास (की)
निवृत्तिः — निवृत्ति (होती है) ।

संगति — कूर्म नाड़ी में संयम करने से क्या होता है ?

कूर्मनाड्यां स्थैर्यम् ॥३१॥
कूर्म — (कण्ठ कूप के नीचे छाती में कछुवे के आकार वाली) कूर्म
नाड्याम् — नाड़ी में (संयम करने से)
स्थैर्यम् — स्थिरता (होती है) ।

संगति — सिद्धों के दर्शन कैसे होते हैं ?

---

[२४] **सात चक्र** — मूलाधार (कुण्डलिनी का स्थान), स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा (तीसरा-नेत्र) और सहस्रार ।

मूर्धज्योतिषि सिद्धदर्शनम् ॥३२॥
मूर्ध — मूर्ध (कपाल में ब्रह्मरन्ध्र की)
ज्योतिषि — ज्योति में (संयम करने से)
सिद्ध — सिद्ध (पुरुषों के)
दर्शनम् — दर्शन (होते हैं) ।

संगति — प्रातिभ-ज्ञान से क्या हो सकता है ?

प्रातिभाद्वा सर्वम् ॥३३॥
वा — अथवा (योगी बिना संयम के भी)
प्रातिभात् — प्रातिभ (ज्ञान से)
सर्वम् — सब कुछ (जान लेता है) ।

संगति — चित्त का ज्ञान कैसे होता है ?

हृदये चित्तसंवित् ॥३४॥
हृदये — हृदय में (संयम करने से)
चित्त — चित्त (का)
संवित् — ज्ञान (होता है) ।

संगति — पुरुष का ज्ञान कैसे होता है ?

सत्त्वपुरुषयोरत्यन्तासंकीर्णयोः प्रत्ययाविशेषो भोगः परार्थान्यस्वार्थसंयमात् पुरुषज्ञानम् ॥३५॥
सत्त्व — चित्त (और)
पुरुषयोः — पुरुष
अत्यन्त-असंकीर्णयोः — परस्पर अत्यन्त भिन्न हैं; (इन दोनों) की

प्रत्ययः — प्रतीतियों (का)
अविशेषः — अभेद (ही)
भोगः — भोग (है); (उनमें से)
परार्थ — परार्थ (प्रतीति से)
अन्य — भिन्न (जो)
स्वार्थ — स्वार्थ (प्रतीति है, उसमें)
संयमात् — संयम करने से
पुरुष — पुरुष (का)
ज्ञानम् — ज्ञान (होता है) ।

संगति — पूर्वोक्त स्वार्थ-प्रत्यय के संयम की क्या विभूतियाँ हैं ?

ततः प्रातिभश्रावणवेदनादर्शास्वादवार्ता जायन्ते ॥३६॥

ततः — उस (स्वार्थ में संयम करने से)
प्रातिभ — सूक्ष्म, व्यवहित, विप्रकृष्ट, अतीत और अनागत वस्तुओं का प्रत्यक्ष,
श्रावण — दिव्य शब्द,
वेदना — दिव्य स्पर्श,
आदर्श — दिव्य रूप,
आस्वाद — दिव्य स्वाद (और)
वार्ता — दिव्य गंध, (ये छः प्रकार के ज्ञान)
जायन्ते — उत्पन्न होते हैं ।

संगति — पूर्वोक्त छः प्रकार के ज्ञान के क्या फल हैं ?

ते समाधावुपसर्गा व्युत्थाने सिद्धयः ॥३७॥

ते — वे (छः प्रकार के ज्ञान)

समाधौ — समाधि अर्थात् पुरुष दर्शन में
उपसर्गाः — विघ्न (और)
व्युत्थाने — व्युत्थान में
सिद्धयः — सिद्धियाँ (हैं) ।

संगति — चित्त का पर-शरीर में आवेश कैसे होता है ?

बन्धकारणशैथिल्यात्प्रचारसंवेदनाच्च चित्तस्य परशरीरावेशः ॥३८॥

बन्ध — बन्ध (के)
कारण — कारण अर्थात् सकाम कर्म और उनकी वासनाओं (को)
शैथिल्यात् — शिथिल करने से
च — और (चित्त की)
प्रचार — गति (के मार्ग को)
संवेदनात् — जानने से
चित्तस्य — चित्त अर्थात् सूक्ष्म शरीर का
पर — दूसरे
शरीर — शरीर (में)
आवेशः — प्रवेश (हो सकता है) ।

संगति — उदान प्राण को जीत लेने से कौन सी विभूतियाँ प्राप्त होती हैं ?

उदानजयाज्जलपङ्ककण्टकादिष्वसङ्ग उत्क्रान्तिश्च ॥३९॥

उदान — (संयम द्वारा) उदान (प्राण को)
जयात् — जीतने से
जल — जल,

पङ्क — कीचड़ (और)
कण्टक — काँटों
आदिषु — आदि में (योगी के शरीर का)
असङ्गः — संयोग नहीं होता
च — और
उत्क्रान्तिः — ऊर्ध्व गति (होती है) ।

संगति — समान प्राण को जीत लेने से क्या उपलब्ध होता है ?

समानजयाज्ज्वलनम् ॥४०॥
समान — (संयम द्वारा) समान (प्राण को)
जयात् — जीतने से (योगी)
ज्वलनम् — दीप्तिमान् (होता है) ।

संगति — दिव्य-श्रोत्र कैसे प्राप्त होता है ?

श्रोत्राकाशयोः सम्बन्धसंयमाद्दिव्यं श्रोत्रम् ॥४१॥
श्रोत्र — श्रोत्र (और)
आकाशयोः — आकाश के
सम्बन्ध — सम्बन्ध (में)
संयमात् — संयम करने से
दिव्यम् — दिव्य
श्रोत्रम् — श्रोत्र (प्राप्त होता है) ।

संगति — आकाश-गमन विभूति कैसे प्राप्त होती है ?

कायाकाशयोः सम्बन्धसंयमाल्लघुतूलसमापत्तेश्चाकाशगमनम् ॥४२॥
काय — शरीर (और)
आकाशयोः — आकाश के
सम्बन्ध — सम्बन्ध (में)
संयमात् — संयम करने से
च — और
लघु — हल्की (वस्तु, जैसे)
तूल — रूई (आदि में)
समापत्तेः — समापत्ति (करने से)
आकाशगमनम् — आकाश-गमन (सिद्धि प्राप्त होती है) ।

संगति — प्रकाश के आवरण का क्षय कैसे होता है ?

बहिरकल्पिता वृत्तिर्महाविदेहा ततः प्रकाशावरणक्षयः ॥४३॥
बहिः — (शरीर से) बाहर (मन की स्थिति जो)
अकल्पिता — कल्पना न की हुई हो, (वह)
वृत्तिः — वृत्ति
महाविदेहा — महाविदेहा (कहलाती है);
ततः — उस (से)
प्रकाश — प्रकाश (के)
आवरण — आवरण अर्थात् अज्ञान (का)
क्षयः — नाश (होता है) ।

संगति — भूत-जय कैसे प्राप्त होता है ?

स्थूलस्वरूपसूक्ष्मान्वयार्थवत्त्वसंयमाद् भूतजयः ॥४४॥

स्थूल — आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी;
स्वरूप — आकाश में शब्द, वायु में स्पर्श, अग्नि में रूप, जल में रस और पृथ्वी में गन्ध;
सूक्ष्म — शब्द-तन्मात्रा, स्पर्श-तन्मात्रा, रूप-तन्मात्रा, रस-तन्मात्रा और गन्ध-तन्मात्रा;
अन्वय — सत्त्व, रजस् और तमस् का मिला हुआ धर्म (और)
अर्थवत्त्व — प्रकृति का पुरुष के लिए भोग और अपवर्ग; (इन में, क्रम से,)
संयमात् — संयम करने से (पाँच)
भूत — भूतों (पर)
जयः — विजय (प्राप्त होती है)।

संगति — पूर्वोक्त भूत-जय का क्या फल है ?

ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसम्पत्तद्धर्मानभिघातश्च ॥४५॥

ततः — उस (भूत-जय से)
अणिमा — अणिमा
आदि — आदि (आठ सिद्धियों[२५] का)

[२५] **आठ सिद्धियाँ** — अणिमा अर्थात् शरीर का सूक्ष्म होना, लघिमा अर्थात् शरीर का हल्का होना, महिमा अर्थात् शरीर का बड़ा होना, प्राप्ति अर्थात् इच्छित भौतिक पदार्थ की प्राप्ति होना, प्राकाम्य अर्थात् इच्छा पूर्ण होना, वशित्व अर्थात् पाँच भूतों और पदार्थों का वश में होना, ईशितृत्व अर्थात् पाँच भूतों और पदार्थों की उत्पत्ति

प्रादुर्भावः — प्रकट होना,
काय — शरीर
सम्पत् — सम्पदा (की प्राप्ति)
च — और
तत् — उन अर्थात् पाँचों भूतों (के)
धर्म — धर्मों (से)
अनभिघातः — रुकावट का न होना, (ये तीनों फल प्राप्त होते हैं)।

संगति — काय-सम्पत् क्या है ?

रूपलावण्यबलवज्रसंहननत्वानि कायसम्पत् ॥४६॥

रूप — रूप,
लावण्य — लावण्य,
बल — बल (और)
वज्र — वज्र (के समान)
संहननत्वानि — संगठन, (ये चारों)
काय — शरीर की
सम्पत् — सम्पदा (कहलाते हैं)।

संगति — ग्रहण-इन्द्रियों में संयम का क्या फल है ?

ग्रहणस्वरूपास्मितान्वयार्थवत्त्वसंयमादिन्द्रियजयः ॥४७॥

ग्रहण — इन्द्रियों की विषयाभिमुखी वृत्ति,

और विनाश का सामर्थ्य होना, यत्रकामावसायित्व अर्थात् संकल्प का पूरा होना।

स्वरूप — स्वरूप,
अस्मिता — अस्मिता,
अन्वय — अन्वय (और)
अर्थवत्त्व — अर्थवत्त्व, (इन पाँचों अवस्थाओं में)
संयमात् — संयम करने से
इन्द्रिय — इन्द्रियों (पर)
जयः — विजय (प्राप्त होती है) ।

संगति — इन्द्रिय-जय का क्या फल है ?

ततो मनोजवित्वं विकरणभावः प्रधानजयश्च ॥४८॥

ततः — उस (इन्द्रिय-जय से)
मनोजवित्वम् — मन के सदृश वेग वाला होना,
विकरणभावः — बिना शरीर के इन्द्रियों में विषयों को अनुभव करने की शक्ति का आना
च — और
प्रधान — प्रकृति (के विकारों पर)
जयः — वशीकरण (होना, ये तीनों सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं) ।

संगति — ग्राह्य और ग्रहण के बाद ग्रहीतृ अर्थात् चित्त में संयम का क्या फल है ?

सत्त्वपुरुषान्यताख्यातिमात्रस्य सर्वभावाधिष्ठातृत्वं सर्वज्ञातृत्वं च ॥४९॥

सत्त्व — चित्त (और)
पुरुष — पुरुष (के)
अन्यता — भेद (को)

ख्याति — जानने
मात्रस्य — वाला (योगी)
सर्व — सारे
भाव — भावों (का)
अधिष्ठातृत्वम् — मालिक
च — और
सर्व — सब का
ज्ञातृत्वम् — जानने वाला (होता है) ।

संगति — विवेकख्याति से आगे की अवस्था क्या है ?

तद्वैराग्यादपि दोषबीजक्षये कैवल्यम् ॥५०॥

तत् — उस (विवेकख्याति) में
अपि — भी
वैराग्यात् — वैराग्य होने से
दोष — दोषों (के)
बीज — बीज (का)
क्षये — नाश होने पर
कैवल्यम् — कैवल्य (होता है) ।

संगति — अब साधकों को सावधान किया जाता है ।

स्थान्युपनिमन्त्रणे सङ्गस्मयाकरणं पुनरनिष्टप्रसङ्गात् ॥५१॥

स्थानि — (साधक को) स्थान वालों अर्थात् वितर्कानुगत, विचारानुगत, अस्मितानुगत और विवेकख्याति वालों (के)
उपनिमन्त्रणे — आदर भाव से
सङ्ग — लगाव (और)

स्मय — घमंड
अकरणम् — नहीं करना चाहिए, (क्योंकि इस से)
पुनः — फिर (से)
अनिष्ट — अमंगल (होना)
प्रसङ्गात् — सम्भव (है) ।

संगति — विवेकज-ज्ञान कैसे उत्पन्न होता है ?

क्षणतत्क्रमयोः संयमाद्विवेकजं ज्ञानम् ॥५२॥

क्षण — क्षण (और)
तत् — उसके
क्रमयोः — क्रमों (में)
संयमात् — संयम करने से
विवेकजम् — विवेक
ज्ञानम् — ज्ञान (उत्पन्न होता है) ।

संगति — विवेकज-ज्ञान कहाँ प्रयुक्त होता है ?

जातिलक्षणदेशैरन्यतानवच्छेदात् तुल्ययोस्ततः प्रतिपत्तिः ॥५३॥

जाति — (जब दो समतुल्य वस्तुओं का) जाति,
लक्षण — लक्षण (और)
देशैः — देश (के)
अन्यता — भेद (से)
अनवच्छेदात् — निश्चय न हो (सके, तब उन)
तुल्ययोः — तुल्य (वस्तुओं) का
ततः — उस (विवेकज्ञान से)
प्रतिपत्तिः — निश्चय (होता है) ।

संगति — विवेकज-ज्ञान की पूर्ण परिभाषा क्या है ?

तारकं सर्वविषयं सर्वथाविषयमक्रमं चेति विवेकजं ज्ञानम् ॥५४॥

तारकम् — बिना निमित्त के अपनी प्रभा से स्वयं उत्पन्न होने वाला,
सर्व — सब (को)
विषयम् — जानने वाला,
सर्वथा — सब प्रकार (से)
विषयम् — विषय को जानने वाला
च — और
अक्रमम् — बिना क्रम के अर्थात् एक ही साथ ज्ञान उत्पन्न करने वाला,
इति — यह
विवेकजम् — विवेकज
ज्ञानम् — ज्ञान (है) ।

संगति — कैवल्य कैसे होता है ?

सत्त्वपुरुषयोः शुद्धिसाम्ये कैवल्यमिति ॥५५॥

सत्त्व — चित्त (और)
पुरुषयोः — पुरुष की
शुद्धि — शुद्धि
साम्ये — समान (होने पर)
कैवल्यम् — कैवल्य (होता है और यहाँ तीसरा पाद)
इति — समाप्त (होता है) ।

-ॐ-